(which is the closing year of Eighth Five Year Plan) is estimated at 2.24 lakhs.

## वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद का प्रकाशन और सूचना निदेशालय

4858. **श्री संघ प्रिय गौतम:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) विज्ञान और प्रौद्योगिक मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के प्रकाशन और सूचना निदेशालय में तकनीकी सहायक के कुल कितने स्वीकृत पद हैं;

(ख) देश में इस समय उक्त कार्यालय की कितनी शाखाएं हैं और उनमें भरे हुए और रिक्त पदों की संख्या कितनी-कितनी है; और

(ग) वर्ष 1992 से लेकर अब तक कितने पद रिक्त पड़े हुए हैं; कितनी बार साक्षात्कार लिया गया और की गयी नियुक्तियों तथा उम्मीदवारों के संबंध में ब्यौरा क्या है?

**प्रधान मंत्री के कार्यालय में राज्य मंत्री तथा परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री और विज्ञान व प्रौद्योगिक मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भुवनेश चतुर्वेदी):** (क) प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय में तकनीकी सहायकों के स्वीकृत पदों की कुल सं॰ 93 है।

(ख) प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय, (पीआइडी) की कोई शाखा नहीं है।

(ग) पीआइडी में वर्ष 1992 से रिक्त पड़े तकनीकी सहायकों के पदों की संख्या निम्न प्रकार से है:

| | |
|---|---|
| 1.1.1992 | 6 |
| 1.1.1993 | 7 |
| 1.1.1994 | 9 |
| 1.1.1995 | 13 |
| 1.4.1995 | 13 |

वर्ष 1992 में पांच बार साक्षात्कार लिए गए जिसके परिणामस्वरूप इन पदों के लिए 4 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। चूंकि अब भर्ती पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है, अतः वर्तमान में रिक्त पदों पर कोई नियुक्ति नहीं की जा रही है।

## तापमान में वृद्धि के प्रतिकूल प्रभाव

4859. **श्री राघवजी:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार का ध्यान दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी "जनसत्ता" के दिनांक 10 अप्रैल, 1995 के समाचार पत्र में तथा अंग्रेजी दैनिक "टाइम्स ऑफ इंडिया" समाचार पत्र में वर्ष 1995 में तापमान में होने वाली भारी वृद्धि के समाचार की ओर दिलाया गया है;

(ख) यदि हां, तो इस समाचार के संबंध में अधिकृत जानकारी क्या है;

(ग) क्या सरकार तापमान में वृद्धि से होने वाले दुष्प्रभावों का सामना करने के लिये कोई योजना बना रही है, यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण है; और

(घ) क्या इस तथ्य का आकलन किया गया है कि सर्वाधिक तापमान वाले क्षेत्र कौन-कौन से होंगे, यदि हां, तो आकलन का निष्कर्ष क्या है और यदि नहीं, तो क्या उपरोक्त खतरे को देखते हुए कोई आकलन किया जायेगा?

**प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री तथा परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भुवनेश चतुर्वेदी):** (क) जी, हां।

(ख) उच्च तापमानों तथा मौसम के किन दिनों में घटित होंगे इसका समय तथा स्थान विशेष के अनुसार विश्वसनीय दीर्घावधि पूर्वानुमान लगाने वाली कोई प्रमाणिक वैज्ञानिक तकनीक नहीं है। गरमी के महीनों में कुछ जगहों पर थोड़े समय के लिए सामान्य उच्चतम तापमान से अधिक तापमान का होना सामान्य मौसम चक्र का एक हिस्सा है। फिलहाल ऐसा कोई संकेत नहीं है कि तापमान सामान्य मौसमी उतार-चढ़ावों से अधिक जा सकते हैं।

(ग) उपर्युक्त (ख) को देखते हुए यह प्रश्न नहीं उठता।

(घ) जी, हां। भारत में लूओं के जलवायु विज्ञान पर अध्ययन किए गए हैं। आमतौर पर गरमी के महीनों में इण्डो-गंगा मैदानों के अतिरिक्त देश के उत्तर-पश्चिमी तथा केन्द्री भागों में मौसमी चक्र के एक अंग के रूप में लुएं चलती हैं। तटीय बेल्ट को छोड़कर अंदरूनी प्रायद्वीप में भी लू महसूस की जाती है।